ST ANTONY'S CONVENT SCHOOL

Gagore Vijaypur

Hindi

CLASS : Xth

की भीड़ को कभी अपने साथ नहीं ले

7. समाचारपत्र और उन की उपयोगिता

अथवा

समाचारपत्र : ज्ञान का सशक्त साधन

(दिल्ली- 2/2000)

प्रस्तावना : आज के अन्तर्राष्ट्रीय युग में प्रत्येक व्यक्ति और देश संसार के प्रत्येक कोने में निर्माण या ध्वंस, सुख या दु:ख आदि से सम्बन्धित प्रत्येक घटना से तत्काल परिचित होना चाहता है । इसी कारण प्रत्येक सुबह नींद से जागते ही उसे यदि सबसे बढ़कर कुछ देखने-सुनने की उत्सुकता एवं प्रतीक्षा रहती है, तो वह है समाचारपत्र । चाय-नाश्ता एक बार न भी मिले; पर समचारपत्र तो हर हाल में मिलना ही चाहिए । यही कारण है कि जिस सुबह छुट्टी पर किसी अन्य कारण समाचारपत्र नहीं मिल पाता, बड़ा सूना-सूना-सा लगता है जैसे कुछ घटा या हुआ ही नहीं या फिर कहीं कुछ खोकर रह गया है । बड़ी अजीब-सी स्थिति बन जाया करती है ।

समाचारपत्रों के प्रकार : सुदूर अतीत में मानव समाज के पास समाचारों के आदान-प्रदान का कतई कोई साधन न था । किसी हरकारे या व्यक्ति के माध्यम से यदि एक समाचार, दूसरी जगह पर पहुँच भी पाता, तो या तो उसका महत्त्व समाप्त हो जाता या फिर उसका वास्तविक स्वरूप बिगड़कर बदल चुका होता । कुछ प्रगति और विकास होने पर, लिपि की रचना और विकास हो जाने पर विशेष प्रकार के कपड़े या कागज़-पत्रों पर लिखकर कुछ विशेष प्रकार के समाचार ही भेजे जाने लगे । फिर हंस और कबूतर जैसे पक्षियों को भी पत्र या समाचारवाहक बनाया गया । इस प्रकार के सारे प्रयास अत्यन्त संकुचित एवं सीमित मात्रा में ही किए गए । ज्यों-ज्यों मानव के पास साधनों का विकास होता गया, समाचारों के आदान-प्रदान का स्वरूप भी बदलता गया । आज मानव-समाज के पास समाचारपत्रों और उससे जुड़े उपकरणों के रूप में समाचार भेजने-पाने के सब प्रकार से उन्नत-विकसित साधन मौजूद हैं । इस कारण उसके प्रति उत्सुकता भी बढ़ गई है ।

समाचारपत्र दैनिक, सान्ध्य, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, षण्माषिक, वार्षिक, द्विवार्षिक और त्रिवार्षिक कई प्रकार के हैं । इनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दैनिक समाचारपत्र ही माना गया है । इसमें विश्व के कोने-कोने में घटित घटनाओं से सम्बन्धित नित्य प्रति के ताज़े समाचार तो रहते ही हैं, उनमें से महत्त्वपूर्ण पर टीका-टिप्पणियां सम्पादक के विवेचन-विश्लेषण तथा अन्य प्रकार के अन्य लोगों द्वारा किए गए विवेचन भी रहा करते हैं । इनके अतिरिक्त नित्य प्रति बदल-बदल कर कई प्रकार की मनोरंजक एवं ज्ञानवद्र्धक सामग्रियाँ भी रहा करती हैं । साप्ताहिक पत्रों में समाचारों का विवेचन-विश्लेषण ही मुख्य हुआ करता है । यही बात पाक्षिकों के बारे में भी कही जा सकती है । यों साप्ताहिक-पाक्षिक, साहित्यिक पत्र भी होते हैं, पर ऊपर बताए अन्य सभी प्रकार के मुख्य तथा साहित्यिक

अन्य प्रकार के उपयोगी विषयों से सम्बन्धित पत्र (मेगजीन्स) हुआ करते हैं, समाचारपत्र नहीं ।

मुख्य प्रयोजन-उपयोग : समाचारपत्र इस नामकरण से ही इन का मुख्य प्रयोजन एवं उपयोग स्पष्ट हो जाता है शब्दों में संसार में घटने वाली सभी प्रकार की घटनाओं के ताजे और दैनिक यानी प्रतिदिन के समाचार जन-जन पहुँचाना ही समाचारपत्र प्रकाशित करने का मुख्य प्रयोजन हुआ करता है । वास्तविक उपयोग भी यही है; क्योंकि का युग राजनीति-प्रधान और अलग-अलग खेमों में बँटा हुआ है । इस कारण प्रतिदिन के प्राप्त होने वाले समाचारों प्रमुख घटनाओं को अपने विचारों-सिद्धांतों का रंग-रूप देकर पहुँचाना, उसी प्रकार उन की व्याख्या विवेचन-विश्लेषण के अपने पाठकों को अपनी विचार-सिद्धांत धारा से प्रभावित करने का प्रयास करना भी समाचारपत्रों का प्रमुख जन और उपयोग कहा एवं स्वीकार किया जा सकता है । यही कारण है कि विश्व में घटने वाली हर महत्त्वपूर्ण घटना रे में प्रत्येक समाचारपत्र का विवेचनात्मक रवैया प्राय: अलग हुआ करता है । अत: उन्हें पढ़कर समझदार पाठक ही निर्णायक की भूमिका निभाया करते हैं ।

अन्यान्य लाभ : कुछ भी हो, ताजे दैनिक समाचार पाने का प्रमुख लाभ तो समाचारपत्र से पाठक को मिलता ही सी कारण हर सुबह वह उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल रहा करता है । इसके अतिरिक्त समाचारपत्र अन्य कई प्रकार उपयोगी एवं लाभकारी सिद्ध हुआ करते हैं । सरकार की देश-विदेश की नीति सम्बन्धी घोषणाएँ भी समाचारपत्रों काशित होती हैं, तो उनकी गुण-दोषात्मक विवेचना भी छप कर जन-मत का निर्माण किया तथा सरकार तक पहुँचा है । विश्व में अन्वेषित होकर स्वरूपाकार पाने वाले वैज्ञानिक उपकरणों की सूचनाएँ, नई उपभोक्ता सामग्रियों चनाएँ एवं इश्तिहार, मनोरंजन की सामग्रियों का प्रकाशन, दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले मों की सूचनाएँ एवं उनके गुण दोष का विवेचन-व्याख्यान, अदालती सूचनाएँ, सरकारी-गैर सरकारी टैण्डर-सम्बन्धी एँ, खेल एवं व्यापार तथा उद्योग-धंधों आदि से सम्बन्धित समाचार, शेयर बाज़ार और जिन्सों के भावों के -चढ़ाव सम्बन्धी जानकारियाँ सभी कुछ तो रहा करता है समाचारपत्रों में ।

सी प्रकार वर-वधू की तलाश के विज्ञापन, सेवाएँ लेने-देने की आवश्यकता-सम्बन्धी विज्ञापन, खोया-पाया, परिवर्तन, अदालती नोटिस आदि कोई भी ऐसा विषय आज के समाचारपत्रों से दूर नहीं हो पाता कि जिस की सूचना नव समाज का किसी भी प्रकार का भी लाभ हो सकता हो, जानकारी बढ़ सकती हो । सभाओं, चुनावों में चुने दाधिकारियों तक की सूचनाएँ समाचारपत्रों में प्रकाशित होकर उनकी चहुँमुखी उपयोगिता, उनसे पहुँचने वाले हर के लाभों की मुँह बोलती तस्वीर प्रस्तुत कर देती है ।

उपसंहार : इन सब तथ्यों के आलोक में स्पष्ट कहा जा सकता है कि समाचारपत्र वास्तव में मानव-समाज और के बहुत बड़े मित्र हैं । थोड़े से पैसों में वे उसे हर प्रकार के अच्छे-बुरे घटित सजग-सजीव रूप से तत्काल या दिन परिचित करा जाते हैं । यहाँ तक उनके अवशेषों को बेचकर अर्थात् रद्दी को बेचकर, बिछाकर या पुस्तकों आदि बढ़ाकर भी मानव लाभ ही कमाया और अपना हित-साधन किया करता है ।

43. कम्प्यूटर विद्युत का अद्भुत वरदान (बा० दिल्ली- 1999)

अथवा

जीवन में कम्प्यूटर का महत्त्व (बा०दिल्ली- 1/2000, ऑ०इं० 1998)

प्रस्तावना : आधुनिक ज्ञान-विज्ञान ने आज के मानव-समाज को दैनिक उपयोग में आ सकने वाले तो कई तरह के महत्त्वपूर्ण आविष्कार प्रदान किए हैं। कहा जा सकता है कि कम्प्यूटर उनमें से अभी तक का अन्तिम बहुआयामी एवं बहूपयोगी आविष्कार है। इसने आज के व्यस्त त्रस्त मानव को कई प्रकार की सुविधाएँ-सरलताएँ प्रदान की हैं। पहले के मानव को जिन अनेक कार्यों को करने के लिए घण्टों माथापच्ची करनी पड़ती थी, कम्प्यूटर की सहायता से अब वे आरम्भ करते ही सम्पन्न भी हो जाया करते हैं। इससे मानव के बहुत सारे श्रम, समय और शक्ति की बचत हो सकी है, जिनका उपयोग वह कई अन्य तरह के उत्पादक कार्यों में कर सकता है।

विज्ञान की महत्त्वपूर्ण देन : उपयोगिता एवं उपलब्धियों की दृष्टि से कम्प्यूटर आज से विज्ञान की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देन है, यह बात, हम ऊपर भी कह आए हैं। धरती पर विज्ञान की पहुँच वहाँ और उन्हीं पदार्थों-तत्त्वों तक है या हो सकती है कि जिन्हें सहज ही छुआ या फिर नापा-तोला जा सकता है। सो विशेष कर नापने, आँकड़े इकट्ठे करके उनके सुखद-दुःखद परिणाम झटपट बता देने के क्षेत्र में आज इस आविष्कार ने सचमुच क्रान्ति ला दी है। इस की सहायता से आज तत्काल ही यहाँ-वहाँ की स्थितियों की जानकारी एक साथ प्राप्त करके, एक साथ कई कार्य किये जा सकते हैं। बात एवं उसका महत्त्व स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ एक उदाहरण देना चाहेंगे। रेलवे टिकट आरक्षित कराने के लिए पहले यात्री को तो घण्टों लाइन में लगना ही पड़ता था, टिकट बाबू को भी रजिस्टर खोलने बन्द करने पड़ते थे। तब कहीं जा कर सही स्थिति का पता चल पाता था। आज मात्र बटन दबाने से यात्रा आरम्भ करने वाले और गन्तव्य स्थान की स्थिति का समुचित ज्ञान हो जाता है। पहले रजिस्टर खोलने बन्द करने के अन्तराल में टिकट बाबू लाभ कमाने की इच्छा से हेरा-फेरी भी कर लिया करता था, आज उसकी भी गुँजायश नहीं रह गई। एक ही स्थान से जाने-आने दोनों की बुकिंग की सुविधा हो गई है। इस प्रकार की सुविधाएँ अन्य क्षेत्रों में भी प्रदान करके कम्प्यूटर ने संभवतः भ्रष्टाचार पर भी प्रहार किया है। इसी कारण इसे महत्त्वपूर्ण देन माना और स्वीकारा गया है।

बढ़ता प्रचलन : सरकारी-गैर सरकारी सभी क्षेत्रों में आज कम्प्यूटर का प्रचलन लगातार बढ़ रहा है; क्योंकि एक तो वह अकेला कई आदमियों का काम कर सकता है, दूसरे अत्यन्त साफ़-सुथरे और प्रायः एकदम सही शुद्ध ढंग से कर पाने में समर्थ है, उसके बढ़ते प्रचलन या निरन्तर बढ़ते क़दमों का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण है। आज जिस किसी भी विभाग में बिल बनाने का कार्य हुआ करता है, उसका कम्प्यूटरीकरण या तो हो चुका है या फिर निरन्तर हो रहा है। रेलवे की तरह डाक तार, विद्युत प्रदाय आदि विभागों में भी इससे कार्य लिया जाने लगा है। इससे काम के अनुशासन और गति की तीव्रता में अभूतपूर्व वृद्धि सम्भव हो सकती है, ऐसा सभी का स्पष्ट मत है।

सुविधाएँ और लाभ : कम्प्यूटर के अनवरत बढ़ते और विस्तृत होते क़दमों से प्राप्त हो सकने वाली सुविधाओं और कई लाभों की ओर ऊपर स्पष्ट संकेत किया जा चुका है। उनके अतिरिक्त आज अन्य कई प्रकार के कार्य भी सुविधापूर्ण ढंग से इस के द्वारा किए जाने लगे हैं। आज कम्प्यूटरीकृत कम्पोजिंग मुद्रण के बड़े अच्छे परिणाम ला रहा है। इसके द्वारा लोगों की जन्म कुण्डलियाँ ठीक-ठीक बनाई और वर-वधू की कुण्डलियाँ मिलाकर उन की विवाह योग्य समानता की जाँच-परख की जाने लगी है। घड़ियों तथा अन्य कोमल कल-पुर्जों वाले यंत्रों की मरम्मत का कार्य भी इन से किया जाने लगा है। क्रेता को वस्तु की गुणवत्ता बताना और तत्काल वस्तुओं का ठीक बिल प्रदान करके सन्तुष्ट कर देने का काम भी इनसे लिया जा रहा है। वायुयानों की उड़ानों पर नियंत्रण, कई प्रकार के इलैक्ट्रानिक युद्धक उपकरणों का निर्माण, संचालन और नियंत्रण, कौन-सा ऐसा कार्य है जो कम्प्यूटर की सहायता सहयोग से सुविधापूर्ण ढंग और लाभदायक परिणाम के साथ संभव नहीं हो पा रहा। इसके सहारे यानी इसके संचालन आदि की विधा का प्रशिक्षण पाकर आज हजारों शिक्षित बेरोजगार रोजगार पाने में भी सफल हो सके एवं हो रहे हैं। इस प्रकार आँकड़ों

के खेल के माहिर इस कम्प्यूटर ने सचमुच मानव-मस्तिष्क होने का कथन सच्चा कर दिखाया है ।

उपसंहार : कम्प्यूटर से गिनाए गए तथा अन्य कई प्रकार के चाहे कितने ही काम क्यों न हो रहे या हो सकते हों; आखिर है तो वह एक बेजान मशीन ही । इस कारण कई बार उसके आँकड़े मानव के मन-मस्तिष्क को चकरा कर रख देने, स्तब्ध-स्तम्भित कर देने वाली सीमा तक ग़लत भी हो जाया करते हैं । सात रुपये सत्तर हजार या सत्तर लाख भी हो सकते हैं । सो इसके बढ़ते प्रयोग या कार्य प्रणाली से बहुत खुश न होकर बहुत सावधान रहना भी आवश्यक है । उसकी कोई ग़लत सूचना या आकलन अर्थ का अनर्थ कर बहुत बड़ी मुसीबत भी खड़ी कर सकता है । पूर्ण सावधानी और कुशल संचालन ही बचाव का एक मात्र उपाय है ।

26. विद्यार्थी और अनुशासन

प्रस्तावना : सृष्टि में जितने भी प्राणी और पदार्थ हैं, उनमें से मनुष्य का जीवन सबसे अनमोल, सर्वाधिक बुद्धिमान और महत्त्वपूर्ण माना गया है । ऐसा इसलिए कि बुद्धिमान, समझदार और भावनापूर्ण होने के कारण जीवन को सही ढंग से जीते हुए, अपने व्यवहार एवं आचरण को अच्छा रख कर वह जो कुछ भी चाहे कर और बन सकता है । सब प्रकार की अच्छाइयों और व्यवहार कुशलता पाने का आधार विद्वानों ने आरम्भ से ही अपने प्रत्येक कार्य को अनुशासित रह कर करने को माना है । हाथ, पैर, नाक, कान, जीभ, आँख को अनुशासन में रखना ही वास्तव में सब प्रकार के अनुशासन में कुशल एवं पारंगत होना माना गया है ।

अनुशासन की आवश्यकता : अनु+शासन इन दो शब्दों के मेल से अनुशासन शब्द बना है । 'अनु' उपसर्ग का अर्थ है साथ और 'शासन' का अर्थ होता है-नियम, विधान । इस प्रकार कोई आदमी अपने देश-काल के अनुसार जहाँ जिस प्रकार के वातावरण और परिस्थितियों में रहा करता है; वहाँ शान्ति, प्रेम, भाईचारा और सद्भाव बनाए रखने के लिए वहाँ के सामान्य सामाजिक और कानूनी नियमों-विधानों का सावधानीपूर्वक पालन करता रहे । ऐसा करना ही वास्तव में अनुशासन है एवं अनुशासित रहना कहा जा सकता है । स्पष्ट है कि अपने तथा सभी के जीवन को पूरे समाज को ढंग से चलाने, सुखी एवं समृद्ध बनाए रखने के लिए ही मूलत: आवश्यक हुआ करता है । अनुशासित व्यक्ति और समाज ही सब प्रकार से उन्नति और विकास कर के जीवन को सुखी समृद्ध और शान्त बना सकते हैं । शान्ति एवं सुख से जीवन बीत सके, इस से बढ़कर और कोई बात नहीं हो सकती । कहा जा सकता है कि इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए ही अनुशासन की सबसे बड़ी आवश्यकता है ।

विद्यार्थी और अनुशासन : मानव जीवन में विद्यार्थी-काल को वर्तमान और भावी जीवन की नींव माना गया है। सुदृढ़ नींव पर ही एक सुदृढ़ एवं सुन्दर भवन खड़ा किया जा सकता है । जैसे सुदृढ़ भवन-निर्माण के लिए अच्छी सामग्री आवश्यक हुआ करती है, उसी प्रकार भावी जीवन के निर्माण के लिए विद्यार्थी-जीवन का अनुशासित होना बहुत ही आवश्यक है, जबकि तथ्य है कि आज विद्यार्थी जीवन को सबसे बढ़कर अनुशासनीय कहा और माना जाता है । वास्तव में आज का विद्यार्थी जीवन पहले का-सा सरल और सीधा न रहकर अत्यधिक अनुशासनहीन हो ही गया है । यह अनुशासनहीनता ही तो है कि आज का विद्यार्थी सारा साल तो पढ़ाई-लिखाई की तरफ ध्यान नहीं देता और परीक्षा आने पर सस्ते नोट्स् कुंजियों और नक़ल का सहारा लेकर परीक्षा की वैतरणी पार करना चाहता है । उसकी नज़रों में अपने अध्यापकों का, बड़ों-बूढ़ों का कोई मान-सम्मान नहीं रह गया । बेकार की बातों को लेकर या फिर थोथी एवं आधारहीन राजनीति के नाम पर हुड़दंग मचाना वह अपना अधिकार मान बैठा है । इसे अनुशासनहीनता के सिवा और क्या कहा जा सकता है कि आज का विद्यार्थी कर्त्तव्यों का नाम तो कभी भूल कर नहीं लेता: पर इस अधिकार

की चर्चा, तोड़-फोड़ और बन्द-हड़ताल की सीमा तक बढ़-चढ़ कर करने लगा है । वह अच्छी पुस्तकों, अच्छी पढ़ाई-लिखाई की माँग न कर सिनेमा की सस्ती टिकटें पाने की माँग करता है, इसे अनुशासनहीनता के सिवा और क्या कहा जाएगा ।

आज का विद्यार्थी सिगरेट-शराब, यहाँ तक कि स्मैक जैसे प्राणलेवा नशे पीने में अपनी शान समझने लगा है। सिगरेट का धुआँ किसी अध्यापक या बड़े-बूढ़े के मुँह पर मार, वह दोस्तों के सामने शान बघारते थकता नहीं । अपनी हर छोटी-बड़ी ओच्छी हरकत को, यहाँ तक कि परीक्षा में नकल करने देने को भी वह अपना अधिकार मान बैठा है। फलस्वरूप शिक्षा-जगत् का सत्यानाश तो हो ही गया है, जीवन और समाज के अन्य क्षेत्र भी ध्वस्त हो रहे हैं । यह बात नहीं कि इस तरह की अनुशासनहीनता के लिए मात्र छात्र ही दोषी हैं । जीवन और समाज के बड़े-बूढ़े और अगुवा कहे जाने वाले लोग, रेडियो, टेलिविजन, सिनेमा आदि उसके सामने जो कुछ परोस रहे हैं, वह उसी सबको निगल और उगल रहा है । अत: विद्यार्थी और युवावर्ग को अनुशासित बनाने के लिए आवश्यक है कि इन सबके ढर्रे में भी आमूल चूल परिवर्तन लाया जाए । बच्चों में स्वभावत: अपने बड़ों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति हुआ करती है । इसलिए फिर पानी की धारा का बहाव ऊपर से नीचे की तरफ हुआ करता है । इस कारण यदि हम चाहते हैं कि विद्यार्थी और युवा वर्ग अनुशासित रहे, तो बड़ों-अगुओं को पहले स्वयं अनुशासित होना होगा ।

सफलता का मार्ग : इस बात में कतई कोई सन्देह नहीं कि सब प्रकार से अनुशासन को अपनाना, बढ़ावा देना ही व्यक्ति और समाज सभी की सफलता का एकमात्र मार्ग है । आज तक कोई भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अनुशासन के अभावों में प्रगति और विकास की सीढ़ियाँ कतई नहीं चढ़ सका । इस तथ्य को ध्यान में रख कर विद्यार्थियों और युवकों को अनुशासनहीनता की धारा में एकदम उलटी दिशा को तैरना सीखना होगा। वे बन्दर नहीं कि जो केवल नक़ल करना ही जानता है अपनी बुद्धि से कुछ नहीं । वे मनुष्य हैं, सभी प्रकार की विद्याएँ ग्रहण कर, अपने तन, मन,मस्तिष्क और आत्मा का विकास करने वाली शिक्षा या कुछ भी कर पाने में समर्थ हैं । अत: स्वयं अनुशासित रह कर विद्यार्थी एवं युवा वर्ग को पूरे जीवन-समाज का नेतृत्व कर उसे सफलता के सार्थक-सुखद मार्ग पर ले जाना होगा । तभी उन की विद्याओं विद्यार्जन को हर प्रकार से उपयोगी एवं सफल माना जाएगा । ध्यान रहे, स्वयं विद्यार्थी एवं युवा वर्ग तथा पूरे समाज की सफलता के लिए अनुशासन के सिवा अन्य कोई मार्ग नहीं ।

उपसंहार : अनुशासन के मार्ग पर चलना कोई कठिन काम नहीं हुआ करता । बस, मात्र इतना ध्यान रखना आवश्यक हुआ करता है कि व्यक्ति जब जहाँ पर है, वहाँ के नियम-कायदों का उचित ध्यान रख के अपना आचरण-व्यवहार करे। विद्यार्थी जीवन यानी नया-नया सीखने-वाला जीवन होने पर भी यदि हम ऐसा कर या सीख नहीं पाते, तो किसी का विद्यार्थी कहना-कहलाना ही व्यर्थ है ।

2. स्वतंत्रता-दिवस (पन्द्रह अगस्त)

प्रस्तावना : मनुष्य तो क्या, संसार का प्रत्येक छोटा-बड़ा प्राणी स्वभाव से ही स्वतंत्र रहने का इच्छुक हुआ करता है। ऐसा रहना उसका प्राकृतिक अधिकार भी है। यही कारण है कि सोने के पिंजरे में बन्द रह कर तरह-तरह के राजभोग खाने वाला पक्षी भी तनिक-सा अवसर पाते ही फुर्र उड़ जाया करता है। सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी और सर्वाधिक बुद्धिमान् मनुष्य अपनी स्वतंत्रता की रक्षा तो चाहता ही है, परिस्थितिवश पराधीन हो जाने पर दुबारा स्वतंत्रता पाने का हरचन्द प्रयास भी किया करता है। प्रत्येक वर्ष मनाया जाने वाला भारतीय स्वतंत्रता-दिवस यानी पन्द्रह अगस्त का दिन भारत के स्वतंत्रता-संघर्ष, भारतीय जन की इसी प्रकार की स्वतंत्रता की भावना, चेतना और इच्छा को साकार स्वरूप देने वाला स्मरणीय और सुनहरा दिन है।

स्वतंत्रता दिवस की पृष्ठभूमि : स्वतंत्रता दिवस यानी पन्द्रह अगस्त का दिन हमारे देश भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय त्योहार माना जाता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में कुछ अंग्रेज़ व्यापारी इस देश में आए थे। कुछ क्षेत्रों में व्यापार करने की आज्ञा लेकर और धीरे-धीरे अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाकर तथा इस महान् देश के शासक बनकर, इसकी सभी तरह की स्वतंत्रता का हरण कर, अपने देश का घर भरने के लिए, इस देश का बुरी तरह से दोहन करने लगे। इस देश के खून-पसीने की कमाई का शोषण कर इसे हड्डियाँ का ढाँचा मात्र बना कर रख दिया। जब तक भारत के समझदार और जागरुक लोगों को यह सब पता चला, बहुत देर हो चुकी थी। फिर भी सन् 1857 में देश को स्वतंत्र कराने का प्रयास किया गया, जो सफल न हो सका और विदेशी अंग्रेज़ों का अन्याय, अत्याचार और शोषण कहीं अधिक बढ़ गया। फिर भी भारतवासी दबे नहीं। क्रान्तिकारी ढंग से और गाँधी जी के अहिंसक सत्याग्रह आदि के द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने का निरन्तर प्रयास करते रहे। अनेक कष्ट सहने, त्याग और बलिदानों के बाद आखिर 15 अगस्त, सन् 1947 के दिन भारत स्वतंत्र हुआ। उसी दिन का स्मरण करने के लिए प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त के दिन सारे देश में स्वतंत्रता-दिवस एक उत्सव की तरह मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है : स्वतंत्रता-दिवस का प्रमुख रूप से आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लाल किले पर किया जाता है। इस आयोजन के प्रमुख नायक देश के प्रधानमंत्री हुआ करते हैं। इस दिन सवेरे चान्दनी चौक की तरफ से जाने पर लाल किले का जो प्रमुख द्वार पड़ता है, वहाँ पर लोग बड़े उत्साह से एकत्रित होते हैं। सेना के तीनों अंगों के चुने हुए सैनिक, पुलिस तथा अन्य सैन्य बलों की टुकड़ियाँ राष्ट्रीय ध्वज एवं उन्हें सलामी देते हैं। एन०सी०सी० की सम्मिलित टुकड़ियाँ भी इसमें भाग लेती हैं। तभी प्रधानमंत्री से शिष्टाचारवश परिचय कराने की रस्म अदा की जाती है। इसके बाद लालकिले की प्राचीर पर जाकर प्रधानमंत्री पहले राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। उसके बाद

देश की देशी-विदेशी नीतियों से सम्बन्धित प्रभावशाली ढंग से भाषण करते हैं । कई प्रकार की विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा आदि से सम्बन्ध वाली योजनाओं की घोषणा भी प्रधानमंत्री द्वारा अक्सर की जाती है । भाषण के बाद तीन बार जयहिन्द का नारा लगाया जाता है । अन्त में स्कूली बच्चे राष्ट्रीय गान का सामूहिक गायन करते हैं और इस प्रकार लाल किले पर यह उत्सव सम्पूर्ण हो जाता है ।

इस दिन रात के समय लाल किले, राष्ट्रपति भवन, संसद तथा अन्य सभी सरकारी भवनों पर प्रकाश की व्यवस्था भी की जाती है । रंग-बिरंगी आतिशबाजी का आयोजन भी होता है । आम जनता भी अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर यह दिन धूमधाम से मनाया करती है । स्थानीय स्तर पर प्रत्येक प्रान्त की राजधानी और नगर-गाँव आदि में यह दिन उपर्युक्त ढंग से ही मनाया जाता है । विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास तो स्वतंत्रता-दिवस मनाते ही हैं । वहाँ रह रहे भारतीय मूल के प्रवासी भी बढ़-चढ़ कर मनाते हैं । इस प्रकार हमारा यह स्वतंत्रता दिवस लगभग सारे विश्व में मनाया जाता है ।

महत्त्व और सन्देश : आम त्योहारों का महत्त्व तो मात्र सम्बद्ध लोगों के लिए ही हुआ करता है, पर राष्ट्रीय त्योहार तो सभी जातियों, धर्मों, वर्गों और सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण हुआ करते हैं। सभी को समान रूप से इस तरह के त्योहारों की प्रतीक्षा रहा करती है और सभी इन से समान रूप से प्रेरणा तथा उत्साह भी ग्रहण किया करते हैं । वास्तव में इस प्रकार के त्योहारों का महत्त्व समझ कर, उस की सार्वभौमिक स्वतंत्र सता की रक्षा, निर्माण और विकास के लिए अपने-आप को समर्पित कर दें । इस सम्मान-समर्पण का स्मरण कराना ही इस प्रकार के त्योहारों का उद्देश्य और महत्त्व हुआ करता है ।

प्रत्येक वर्ष मनाया जा रहा स्वतंत्रता दिवस हमें यही सन्देश दे जाया करता है कि तरह-तरह के कष्ट सहकर, त्याग और बलिदान करके हमने जो स्वतंत्रता प्राप्त की है, हर मूल्य पर प्राणों की बाजी लगाकर भी उसकी रक्षा करनी है। तथा राष्ट्र को हर प्रकार से उन्नत, विकसित और सम्पन्न बनाना भी हम सभी का सम्मिलित कर्त्तव्य है ।

उपसंहार : संसार में स्वतंत्र व्यक्ति और राष्ट्र ही जीवित रहने का अधिकार रखते हैं । राष्ट्रीय जीवन में किसी प्रकार के भेद-भाव, आलस्य एवं निकम्मेपन का तनिक-सा संचार भी एक राष्ट्र के रूप में उसकी और उसके साथ उस भू भाग विशेष के सभी निवासियों की सत्ता को समाप्त कर सकता है । राष्ट्र के रहने पर ही व्यक्ति, समाज वर्ण और उन सभी के अधिकार भी सुरक्षित रहा करते हैं । स्वतंत्र राष्ट्रों के स्वतंत्र नागरिक ही अपने भाग्य के विधाता बना करते हैं। निकट अतीत में हम स्वार्थी तत्त्वों पर विश्वास करने का फल सौ वर्षों की पराधीनता के कष्टों-उत्पीड़नों के रूप में भली प्रकार से चख चुके हैं । पुनः वैसा अवसर इस देश की धरती पर न आए इस बात की प्रेरणा पाकर, निश्चय करके ही हम स्वतंत्र दिवस के उत्सव को सार्थक सफल बना सकते हैं ।

टी. वी. : वरदान या अभिशाप

(दिल्ली-1-3/2001

प्रस्तावना : आज का मानव ज्ञान-विज्ञान की प्रगतियों का नवल इतिहास रचने वाले जिस युग में निवास कर रहा है, वह अपनी नित नई उपलब्धियों से उसके घर-द्वार को भरकर, उसकी अनवरत श्रीवृद्धि करता जा रहा है। वैज्ञानिक शोध के बल पर जब तक हम किसी एक उपकरण की सम्पूर्ण जानकारी और परिचय प्राप्त कर पाते हैं, तब तक उस से भी कई कदम आगे बढ़ा हुआ कोई नया उपकरण सामने आकर उसे कतई पुराना घोषित कर देता है। इस कारण अनेकश: आम आदमी को मात्र चकित-विस्मित होकर रह जाना पड़ता है ।

विज्ञान की महत्त्वपूर्ण देन : आधुनिक विज्ञान ने मनोरंजन, शिक्षा और जन-जागरण के लिए एक मानव को दूसरे के साथ जोड़े और परिचित बनाए रखने के लिए जो अनेक प्रकार के उपकरण उपलब्ध कराए हैं, दूरदर्शन यानी टेलिविजन उन सभी में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देन है । इसने झोंपड़ी से लेकर राजभवन तक प्रत्येक घर में पहुँचकर मनोरंजन और जानकारियों के जगत् को भी प्रत्येक घर में पहुँचा दिया है । पहले हमें महज़ मनोरंजन की खातिर ही घर-घाट से दूर चलकर जाना पड़ता था; लेकिन आज घर की बैठकों में बैठकर अन्य आवश्यक कार्य निपटाते हुए, खाते-पीते या लेट कर विश्राम करते हुए हम दूरदर्शन के द्वारा सभी प्रकार का आनन्द मनोरंजन सहज ही पा रहे हैं । बस, बटन दबाया नहीं कि गीत-संगीत, नाटक, धारावाहिक, चलचित्र या तरह-तरह की जानकारियाँ बढ़ाने वाला कोई-न-कोई कार्यक्रम शुरू । एक कार्यक्रम पसन्द न आए पर दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ मनपसन्द कार्यक्रम बदल कर देखा-सुना जा सकता है। इन्हीं सब कारणों से दूरदर्शन को आधुनिक विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा गया है ।

उपयोग और प्रभाव : दूरदर्शन का क्या-क्या उपयोग है अथवा हो सकता है, इस का संकेत ऊपर किया जा चुका है; क्योंकि अब दूरदर्शन पर प्राय: सुबह-सवेरे से लेकर देर रात तक तरह-तरह के कार्यक्रम उसके कई चैनलों से प्रसारित होने लगे हैं, सो इसका सर्व प्रमुख उपयोग यही माना और गिनाया जा सकता है कि कभी भी इच्छा होने पर हम मनचाहा कार्यक्रम देखकर मनोरंजन या जानकारी पाने की इच्छा पूर्ण कर सकते हैं । मनोरंजन पाने के जितने भी जरिये आज के संसार में प्रचलित हैं, उन सभी का प्राय: दैनिक प्रसारण दूरदर्शन पर होता रहता है । दिन में कई बार प्राय: सभी राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय भाषाओं सें समाचारों का प्रसारण कर दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य दोनों रूपों में संसार में घटने वाली हर दिन की प्रमुख घटनाओं से भी परिचित कराता रहता है । विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिए विशेष प्रकार की पाठ्य सामग्री प्रसारित कर शिक्षण का कार्य तो यह करता ही है नाटक धारावाहिक दिखाकर जीवन-समाज-दर्शन और जन-शिक्षण का थोड़ा-बहुत कार्य भी करता रहता है। फिर आज के युग में जनोपयोगी, जीवन को सहज, सरल बनाने और स्वस्थ रखने वाले तरह-तरह के उत्पादन भी सामने आते रहते हैं । दूरदर्शन उन के विज्ञापन का भी एक बहुत विस्तृत और सर्वोत्कृष्ट माध्यम कहा जा सकता है। अक्सर हर प्रकार के कार्यक्रमों के शुरू, मध्य एवं अन्त में, अनेकश: बीच में रोक-रोक कर भी विभिन्न प्रकार के उत्पादों का विज्ञापन होता रहता है। इससे उपभोक्ता और निर्माता या उत्पादक दोनों को लाभ पहुँचता है । इस प्रकार के अन्य कई प्रकार के उपयोग एवं लाभ भी गिनाए जा सकते हैं । जैसे- कृषि दर्शन द्वारा कृषि कार्यों से सम्बन्धित सभी प्रकार की लाभप्रद एवं हानियाँ से बचाव की सूचनाएँ, पशु-पालन, मुर्गी-पालन, मधुमक्खी-पालन, घरेलू वाटिकाएँ, बेकार समझे जाने वाले सामान से कई तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाना, विविध प्रकार के व्यंजन बनाना सीखना, वेशभूषा, बुनाई-कढ़ाई और विभिन्न सभ्यता-संस्कृतियों, उनकी रीति-नीतियों से परिचय आदि सभी कार्य दूरदर्शन कर रहा है ।

जहाँ तक प्रभाव का प्रश्न है, यदि प्रस्तुतकर्त्ता और उपयोग करने वाले दर्शक दोनों सूझ-बूझ और सन्तुलित दृष्टि

ने काम लें तो इसका प्रभाव उचित एवं अच्छा ही कहा जाएगा । लेकिन देसी-विदेशी संस्कृति को बढ़ावा देने वाले प्रसारण किए जा रहे हैं, निश्चय ही उनका प्रभाव आम जन पर-विशेषत: बच्चों, किशोरों और अपरिपक्व मन-मस्तिष्क वाले किशोरों पर अच्छा एवं स्वस्थ प्रभाव नहीं पड़ रहा है । ऐसा हम भी मानते हैं । इससे स्पष्ट है कि दूरदर्शन अपने अच्छे-बुरे दोनों रूपों में मानव जीवन और समाज को प्रभावित कर रहा है । इसमें प्रसारित कार्यक्रम और विज्ञापन आदि सुरुचिपूर्ण और उपभोक्ता संस्कृति के उत्प्रेरक और सर्जक होने चाहिए ताकि हर कोई स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त कर सके । ऐसा होने पर ही दूरदर्शन नई पीढ़ी के लिए उपादेयी सिद्ध हो सकता है ।

15. मेरे जीवन का लक्ष्य

(दिल्ली- 93, 1/1994 c)

प्रस्तावना : मनुष्य-जीवन संसार के सभी प्राणियों में सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण तो माना ही जाता है, दुर्लभ भी कहा गया है । माना जाता है कि एक-के बाद एक लगातार चौरासी लाख योनियों के कठिन भोग भोगने के बाद कहीं जाकर संचित पुण्य कर्मों के कारण यह मनुष्य शरीर मिल पाया करता है । इस कारण इसे व्यर्थ गंवा देना एक बड़ी भूल तो है ही, महापाप भी है । इस जीवन में अच्छे कर्म एवं परिश्रम करके आदमी कुछ भी कर सकता है । कुछ भी बन और पा सकता है । अपने सत्कर्मों के द्वारा लोक के साथ-साथ परलोक तो सुधार ही सकता है, जन्म-मरण के बन्धनों से हमेशा के लिए छुटकारा या मुक्ति भी पा सकता है । ऐसा सब करने एवं पाने के लिए एक-न-एक लक्ष्य निर्धारित करके चलना ही अच्छा एवं आवश्यक कहा गया है।

जीवन लक्ष्य : मनुष्य अपनी हार्दिक चेतना के स्तर पर जिस कार्य को महत्त्वपूर्ण मान कर करना चाहता है या फिर जो बनकर कुछ करना चाहता है सामान्य तौर पर उसी को उसके जीवन का लक्ष्य कहा जाता है। आज हमारे जीवन और समाज की तरह-तरह से जो दुर्गति हो रही है, उसमें जो अनेक प्रकार की कुरीतियाँ और कुप्रथाएँ हैं, कई तरह की अनैतिकताएँ और भ्रष्टाचार हैं, जी चाहता है कि इन सभी को समाप्त करने के लिए मैं अकेला ही संघर्ष छेड़ दूँ। जीवन और समाज में अशिक्षा है, अन्याय और अत्याचार हैं, कई प्रकार की बुरी आदतें और व्यभिचार हैं, असाध्य समझे जाने वाले अनेकविध रोग हैं, जी में आता है कि मैं इन सभी के विरुद्ध अपने संघर्ष का बिगुल बजा दूँ । इन सभी प्रकार की बुराइयों को समाप्त कर जीवन और समाज को पाक-साफ़ बनाकर सामान्य विशेष सभी प्रकार के लोगों के जीवन योग्य बना दूँ । अब आप ही सोचिए कि एक साथ अध्यापक, जज, वकील, डॉक्टर, नेता-अभिनेता बन पाना सम्भव नहीं हो पाया करता । तब वह क्या हो सकता या बना जा सकता है कि जो हो या बनकर मेरे जैसा व्यक्ति एक साथ उपर्युक्त सभी मोर्चों पर अपना संघर्ष आरम्भ कर सके ? नहीं समझे न । तो सुनिए मेरे मन-मस्तिष्क में ऐसा कर पाने की एक योजना आरम्भ से ही विद्यमान है । एक चीज़ बनकर मैं अवश्य ही इन सभी मोर्चों पर काम कर सकता हूँ या फिर इस प्रकार की सभी अनैतिक एवं दमघोटू स्थितियों के विरुद्ध कम-से-कम जनमत तो तैयार या जागर किया ही जा सकता है । ऐसा समाज-सेवक बनकर ही संभव हो सकता है । जो मेरे जीवन का चरम लक्ष्य एक निःस्वार्थ समाज-सेवक बनना ही है । मैं जो पढ़ाई-लिखाई कर रहा हूँ समझिए इसी लक्ष्य को सामने रखकर, इसी को पाने के लिए ही कर रहा हूँ । मेरा विश्वास है कि मैं अवश्य ऐसा बन पाऊँगा ।

लक्ष्य पाने के प्रयास : आप कह सकते हैं कि ठीक है, कल को मैं एक समाज-सेवक बन जाऊँगा । अवश्य न सकूँगा । परन्तु आज तक समाज का सुधार करने का लक्ष्य सामने रखकर पता नहीं कितने और कितनी तरह से समाज सेवक इस क्षेत्र में आए, पर सफलता कोई नहीं पा सका । सभी तरह के समाज-सेवक और सुधारक आते रहे, अपनी बातें कहते रहे और चले गए । यह समाज है कि तब भी उधर से कान बन्द कर अपनी राह चलता रहा, आज भी चले जा रहा है । न तब सुधर सका न आज सुधरेगा । बात तो आप ठीक कहते हैं, मैं तो उन सभी के प्रयास सफल मान कर ही इस राह पर चलने का लक्ष्य लिए बैठा हूँ । जरा सोच कर देखिए तनिक गम्भीरता और गहराई से । यदि सभी न हुए होते, तो आज तक जीवन-समाज बुराइयों और कुरीतियों के किसी अन्धे गहरे कुएँ में न डूब चुका होता । जरा ध्यान दीजिए, हम अपने नाखून काटते हैं या बाल कटवाते हैं, ये दोनों फिर उग आते हैं । फिर-फिर कटवाते

हैं और ये फिर-फिर उगते रहते हैं। इसी प्रकार बुराइयों, कुरीतियों, भ्रष्टाचारों को जन-चेतना जगा कर समाप्त किया जाता है, अवसर पाकर ये सब फिर उभर आते हैं। सो अच्छाई का बुराई और उजाले का अन्धेरे के विरुद्ध जंग हमेशा से चलता आ रहा है, चलता रहेगा। एक निःस्पृह समाज सेवक बनकर मैं भी सबके विरुद्ध उस संघर्ष, उस जंग को जारी रख कर उसे आगे बढ़ाना चाहता हूँ। प्रयास करने के मेरे इस अधिकार से तो मुझे कोई वंचित नहीं कर सकता न।

लक्ष्य पाने की अनुभूति का सुख : लक्ष्य मिल पाना प्रायः एक बड़ा ही कठिन कार्य हुआ करता है। परन्तु लक्ष्य की तरफ बढ़ते रहने, उसे पाने की अनुभूति करने या करते रहने का भी तो अपना एक सुख हुआ करता है न? कम-से-कम अनुभूति आदमी को निराश तो नहीं ही होने देती। मैंने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाने का जी-जान से प्रयास किया; पर उस तक पहुँच नहीं पाया, रास्ते में ही मर गया। उस मृत्यु के समय कम-से-कम यह सन्तोष तो रहता ही है कि मैं अन्त तक लड़ता रहा, निरन्तर प्रयास करता रहा, नहीं पहुँच पाया लक्ष्य तक तो न सही? सच, अन्त काल में ऐसी अनुभूति भी बड़ी सुख-आनन्ददायक हुआ करती है। वह चेतना को, प्राणों को सभी तरह की हीनताओं से छुटकारा दिला कर मुक्ति का सा आनन्द और सुख प्रदान कर जाया करती है। आज तक जितने भी समाज-सेवा के क्षेत्र में काम करने वाले हो बीते हैं, हम उनका सद्भाव से इसीलिए तो स्मरण करते हैं कि उन्होंने सद्प्रयास किया, अनुभूति का सुख पाया।

उपसंहार : सो समाज-सेवा ही मेरे जीवन का चरम लक्ष्य है। उस के लाभ, प्रभाव सफलता-असफलता की बेकार की बातें कह कर मुझे हतोत्साहित मत कीजिए। मुझे प्रयास का आनन्द लेने दीजिए। कल किस ने देखा है, छोड़िए। आपने जीवन का जो लक्ष्य बनाया है, उस पर चल पड़िए। नहीं बनाया अभी तक, तो आज भी बनाकर उसके पाने की दिशा में कदम बढ़ा दीजिए। बहुत सम्भव है कि उस तक पहुँच ही जाएँ। न भी पहुँचे, तो भी पहुँचने के प्रयास सुख से तो अपने-आप को वंचित नहीं होने दीजिए।

1. पर्यायवाची अथवा समानार्थी शब्द (Synonym

किसी विशेष शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द ***'पर्यायवाची'*** अथवा ***'समानार्थी'*** कह

1. **अंग** – वाय, गात, देह, शरीर, तन, वपु, कलेवर, विग्रह, मूर्ति ।
2. **अग्नि** – अनल, आग, पावक, दहन, ज्वलन, कृशानु, दव, वह्नि, हुताशन
3. **अनी** – फौज, कटक, दल, सेना, चमू ।
4. **अनुपम** – अतुल, द्वितीय, अद्भुत, अनूठा, अनोखा, अपूर्व ।
5. **अमृत** – अमिय, अमी, पीयूष, सुधा, सोम ।
6. **अर्जुन** – कपिध्वज, कौन्तेय, गुडाकेश, धनंजय, पार्थ, गांडीवधर ।
7. **अरण्य** – कानन, जंगल, वन, विपिन ।
8. **अश्व** – बाजि, घोटक, घोड़ा, तुरंग, रविपुत्र, सैन्धव, हय ।
9. **असुर** – तमीचर, दानव, दनुज, दैत्य, निशाचर, रजनीचर, राक्षस ।
10. **अहंकार** – अहं, अभिमान, गर्व, घमण्ड, दम्भ, दर्प, मद ।
11. **आँख** – अक्षि, ईक्षण, चक्षु, दृग, चख, दीदा, नेत्र, नयन, लोचन ।
12. **आकाश** – आसमान, अनन्त, अनंग, अभ्रक, गगन, दिव, नभ, व्योम, शून्य ।
13. **आनन्द** – आह्लाद, आमोद, उल्लास, चैन, खुशी, प्रमोद, प्रसन्नता, विहार, स
14. **आम** – आम्र, कमलवल्लभ, मन्मथालय, पिकबंधु, रसाल, सहकार, अमृ
15. **इच्छा** – आकांक्षा, अभिलाषा, उत्कण्ठा, कामना, मनोरथ, लालसा, लिप्सा
16. **इन्द्र** – देवराज, पाकशासन, पाकरिपु, पुरहूत, महेन्द्र, शचीपति, देवेन्द्र, सु

17. इन्द्राणी - ऐन्द्री, इन्द्रवधू, जयवाहिनी, माहेन्द्री, पुलोजमा, शतावरी, शची ।
18. ईश्वर - अगोचर, अनादि, अलख, परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, ईश ।
19. उजाला - आलोक, तेज, द्युति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा ।
20. कन्या - आत्मजा, कुमारी, पुत्री, बेटी, सुता ।
21. कपड़ा - अम्बर, चीर, दुकूल, पट, वस्त्र, वसन ।
22. कमल - अरविन्द, जलज, इन्दीवर, कोकनद, नलिन, पंकज, पारिजात, वारिज, शम्बर, शतदल, राजीव सरसिज, सरोज ।
23. कामदेव - अनंग, काम, कुसुम-बाण, कन्दर्प, मदन, मन्मथ, मनसिज, मीनकेतु, मनोज, पुष्पचाप, रतिसखा नन्दी, शम्बारि, रतिपति ।
24. किरण - अंशु, कर, किरन, मरीचि, मयूख, रश्मि ।
25. कुबेर - अलकाधिपति, किन्नरेश, धनद, धनाधिप, यक्षराज ।
26. कोयल - कोकिल, परभृत, पिक, वसन्तदूत, ।
27. क्रोध - अमर्ष, कोप, गुस्सा, रोष ।
28. कौआ - अरिष्ट, काक, काग, पिशुन, वायस ।
29. कृष्ण - गोपाल, नन्दनन्दन, कंसारि, मुरलीधर, राधिकारमण, ब्रजराज, वंशीधर, ब्रजेश, द्वारिकाधीश यदुनाथ, हरि ।
30. खल - अधम, कुटिल, दुर्जन, दुष्ट, धूर्त, नीच, पामर ।
31. गंगा - जाह्नवी, त्रिपथगा, देवनदी, ध्रुवनन्दा, भागीरथी, मन्दाकिनी, सुरसरि ।
32. गधा - खर, गर्दभ, रासभ, वैसाखनन्दन ।
33. गणेश - गजानन, गौरीसुत, गिरिजानन्दन, गणाधिप, गणपति, भवानीनन्दन, मोददाता, मोदकप्रिय, लम्बोदर।
34. गृह - घर, निकेतन, अयन, आवास, आलय, ओक, धाम, सदन, शाला, निलय, निकेत ।
35. चतुर - कुशल, निपुण, नागर, दक्ष, पटु, योग्य, प्रवीण, विज्ञ ।
36. चन्द्र - कलानिधि, चन्द्रमा, चाँद, तारापति, द्विजराज, मयंक, राकेश, राकापति, सुधाकर, शशि, सारंग, सुधांशु, हिमांशु, निशाकर ।
37. चाँदनी - चन्द्रिका, चन्द्रमरीची, अमृततरंगिणी, कौमुदी, ज्योत्स्ना ।
38. जमुना - अर्कजा, कालिन्दी, तरणिजा, यमुना, रविनन्दिनी, रविसुता, सूर्यसूता ।
39. जल - जीवन, तोय, नीर, पानी, वारि, पय, रस, सारंग, सलिल ।
40. तलवार - असि, कृपाण, करवाल, चन्द्रहास, खड्ग ।
41. तालाब - जलाशय, ताल, पुष्कर, सर, सरोवर ।
42. दास - अनुचर, किंकर, चाकर, नौकर, परिचारक, भृत्य, सेवक ।
43. दिन - अहन, दिवा, दिवस, वार, वासर ।
44. दुःख - क्लेश, क्षोभ, कष्ट, पीड़ा, वेदना, व्यथा, यातना, संताप ।
45. दुर्गा - अभया, अजा, कालिका, कल्याणी, कामाक्षी, चामुण्डा, चण्डिका, धात्री, शम्भवी, सुभद्रा सिंहवाहिनी ।
46. देवता - अमर, अमर्त्य, आदित्य, त्रिदश, देव, निर्जर, सुर ।
47. द्रव्य - दौलत, धन, वित्त, विभूति, सम्पदा, सम्पत्ति ।
48. नदी - आपगा, निम्नगा, ...

49. नरक – दुर्गति, यमपुर, यमलोक, यमालय, संघात ।
50. नौका – जलपात्र, जलयान, जलवाहन, तरिणी, नाव, पतंग, बेड़ा ।
51. पक्षी – अण्डज, खग, द्विज, परिन्दा, पखेरू, विहग, शकुनि ।
52. पत्नी – कलत्र, अर्धांगिनी, बहू, भार्या, वधू, प्राणप्रिय, सहधर्मिणी ।
53. पति – अधिपति, भर्त्ता, भरतार, बालम, बल्लभ, स्वामी ।
54. पत्थर – उपल, प्रस्तर,पाषाण, पाहन, शिला ।
55. पण्डित – कोविद, धीर, बुध, मनीषी, प्राज्ञ, विद्वान्, सुधी ।
56. पर्वत – तुंग, अचल, गिरि, नग, भूमिधर, महीधर, पहाड़, शैल, भूधर ।
57. पार्वती – आर्या, उमा, अपर्णा, दुर्गा, भवानी, शैलसुता, सर्वमंगला, सती ।
58. पुत्र – आत्मज, तनय, तनु, नन्द, पूत, बेटा, लड़का, सुत ।
59. पुत्री – आत्मजा, तनया, दुहिता, बेटी, लड़की सुता ।
60. पुष्प – कुसुम, प्रसून, फूल, मंजरी, लतान्त, सुमन ।
61. पेड़ – तरु, द्रुम, पर्णी, पादप, वृक्ष, विटप, शाल ।
62. प्रकाश – चमक, ज्योति, छवि, द्युति, प्रभा, विकास ।
63. प्रेम – अनुराग, प्यार, प्रीति, स्नेह ।
64. पृथ्वी – अवनि, जगती, धरणी, धरती, धरा, भू, भूमि, वसुधा, वसुन्धरा ।
65. बन्दर – कपि, मर्कट, वानर, शाखामृग, हरि ।
66. बाण – दषु, तीर, नाराच, विशिख, शर, शिलीमुख,सायक ।
67. ब्रह्म – कर्तार, आत्मभू, अज, चतुरानन, नाभिजन्म, प्रज्ञापति, विधाता, लोकेश, पितामह, विरंचि, स्वयंभू, सदानन्द, हिरण्यगर्भ ।
68. ब्राह्मण – अग्रजन्मा, गुरु, द्विज, भूदेव, महादेव, विप्र ।
69. बिजली – अशनि, क्षणप्रभा, दामिनी, चंचला, चपला, सौदामिनी ।
70. भ्रमर – अलि, भौंरा, मधुप, मिलिन्द, षट्पद, शिलीमुख, मधुकर ।
71. मछली – अण्डज, जलजीवन, झख, मकर, मत्स्य, मीन, शकुची ।
72. महादेव – कैलाशपति, गिरीश, चन्द्रशेखर, पिनाकी, पशुपति, भूतेश, त्रिलोचन, नीलकंठ, भूतनाथ, साँपदेव, शिव, शंकर ।
73. मेघ – जगजीवन, जलधर, नीरद, बादल, वारिद, पयोद, पयोधर ।
74. मोर – अहिभक्षी, केकी, नीलकंठ, मयूर, भुजंग, सारंग ।
75. मोक्ष – कैवल्य, निर्वाण, परमपद, परमधाम, मुक्ति ।
76. यम – जीवनपति, जीवितेश, धर्मराज, दण्डधर, शमन, हरि ।
77. रमा – इन्दिरा, कमला, पद्म, भार्गवी, लक्ष्मी, श्री, समुद्रजा, हरिप्रिया ।
78. राजा – नरपति, नरेश, नृप, भूपति, महीपति, सम्राट, बादशाह ।
79. रात – निशा, रजनी, रात्रि, रैन, विभावरी, यामिनी, निशीथ, शर्वरी ।
80. रावण – दशकंध, दशवदन, दशानन, लंकेश, दशमुख ।
81. विष्णु – उपेन्द्र, अच्युत, केशव, गोविन्द, गरुड़ध्वज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, जनार्दन, जलशायी, दामोदर, नारायण, पीताम्बर, माधव, मुकुन्द, लक्ष्मीपति, रमापति, विधु, विश्वस्वरूप ।
82. वसन्त – ऋतुपति, ऋतुराज, बहार, मधु ।

83. **शंख** – कम्बु, जलज, महानाद, समुद्रजा, सुगीव ।
84. **शिक्षक** – अध्यापक, आचार्य, आदेशक, उपदेशक, उपाध्याय, गुरु ।
85. **शोभा** – आभा, कांति, छवि, दमक, प्रभा, द्युति, श्री ।
86. **शिखा** – केशी, चुरकी, चोटी, चुटिका ।
87. **शीघ्र** – अविराम, अविलम्ब, आशु, तत्काल, तुरन्त, तत्क्षण, फौरन, सत्वर ।
88. **सब** – अखिल, निखिल, पूर्ण, सकल, समस्त, सम्पूर्ण, सर्व ।
89. **समुद्र** – उदधि, नीरनिधि, नीरधि, पयोधि, रत्नाकर, सागर, सिंधु ।
90. **समूह** – गण, जत्था, झुण्ड, दल, मण्डली, वृन्द, संघ, राशि, समुच्चय ।
91. **सरस्वती** – इला, गिरा, महाश्वेता, भारती, भाषा, वाचा, वाणी, वागेश्वरी, वागीश, शारदा ।
92. **सर्प** – अहि, उरग, नाग, फणी, भुजंग, विषधर, साँप ।
93. **सिन्धुर** – कुंजर, कुम्भी, गज, नाग, द्विप, दन्ती, वितुण्ड, हाथी, हस्ती ।
94. **सिंह** – केशरी, केहरि, नाहर, मृगेन्द्र, मृगराज, बहुबल, वनपति, शेर ।
95. **सुन्दर** – उत्कृष्ट, कमनीय, चित्ताकर्षक, मनोहर, रमणीक, ललाम, रमणी ।
96. **सूर्य** – आदित्य, अंशुमाली, ग्रहपति, दिनकर, दिवाकर, मार्तण्ड, भास्कर, मरीची, सूरज, पतंग, हंस, भानु ।
97. **सोना** – कंचन, कनक, जातरूप, स्वर्ण, हिरण्य, हेम ।
98. **स्त्री** – अबला, कान्ता, कामिनी, कलत्र, नारी, बनिता, ललना, रमणी ।
99. **स्वर्ग** – अवरोह, देवलोक, द्यो, नाक, फलोदय, सुरलोक ।
100. **हवा** – अनिल, प्रवमान, पवन, वायु, वात, समीर, समीकरण ।

2. विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द (Antonyms)

कुछ शब्द भाषा में विपरीतार्थक एक साथ तथा अलग-अलग भी प्रयुक्त किए जाते हैं । ऐसे शब्द के अर्थ एक दूसरे से बिल्कुल विरोधी होते हैं । यहाँ पर ऐसे शब्दों पर विस्तार से प्रकाश डाला जा रहा है । जैसे :

(क) 'अ' उपसर्ग के योग से बने कुछ विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
ज्ञान	अज्ञान	कथ्य	अकथ्य	क्षम्य	अक्षम्य
कल्याण	अकल्याण	कृत्रिम	अकृत्रिम	कुटिल	अकुटिल
चेतन	अचेतन	भाव	अभाव	चर	अचर
भेद	अभेद	चल	अचल	देय	अदेय
दृश्य	अदृश्य	ग्रह्य	अग्रह्य	संतोष	असंतोष
सभ्य	असभ्य	रुचि	अरुचि	स्थिर	अस्थिर
शिष्ट	अशिष्ट	शांति	अशांति	सुर	असुर
शिक्षित	अशिक्षित	शुभ	अशुभ	श्रान्त	अश्रान्त
शिव	अशिव	शान्त	अशान्त	हिंसा	अहिंसा
स्वीकृत	अस्वीकृत	न्याय	अन्याय	क्षर	अक्षर
पवित्र	अपवित्र	योग्य	अयोग्य	प्रसन्न	अप्रसन्न
धर्म	अधर्म	छूत	अछूत	धर	अधर
पर्याप्त	अपर्याप्त	धीर	अधीर	मर	अमर

सत्य	असत्य	मंगल	अमंगल	सत्	असत्
पूर्ण	अपूर्ण	खाद्य	अखाद्य	स्वस्थ	अस्वस्थ
हित	अहित	जर	अजर	गोचर	अगोचर
मोल	अमोल	ज्ञेय	अज्ञेय	साधारण	असाधारण
साधु	असाधु				

ब) 'अन' उपसर्ग के योग से बने कुछ विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अर्थ	अनर्थ	आगत	अनागत	आरूढ़	अनारूढ़
आचार	अनाचार	उपयोग	अनुपयोग	आतुर	अनातुर
आतप	अनातप	आदर	अनादर	भिज्ञ	अनभिज्ञ
आर्य	अनार्य	आदि	अनादि	आस्था	अनास्था
उदार	अनुदार	आवृत	अनावृत	उपकृत	अनुपकृत
आवश्यक	अनावश्यक	आहूत	अनाहूत	आश्रित	निराश्रित
इच्छा	अनिच्छा	इच्छित	अनिच्छित	इष्ट	अनिष्ट
ईश्वर	अनीश्वर	ईश	अनीश	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
एकता	अनेकता	उपस्थित	अनुपस्थित	ऐक्य	अनैक्य
एक	अनेक	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य	उपयुक्त	अनुपयुक्त
उचित	अनुचित	अद्य	अनद्य		

ग) 'अप' उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उत्कर्ष	अपकर्ष	उपकार	अपकार	उपचार	अपचार
कीर्ति	अपकीर्ति	मान	अपमान	मितव्यय	अपव्यय
शकुन	अपशकुन	शब्द	अपशब्द	यश	अपयश

(घ) नि, निर् उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आदर	निरादर	आशा	निराशा	आयात	निर्यात
आशावादी	निराशावादी	आमिष	निरामिष	उत्साही	निरुत्साही
प्रवृत्त	निवृत्त	डर	निडर	सकाम	निष्काम
सक्रिय	निष्क्रिय	सतेज	निस्तेज	सचेष्ट	निश्चेष्ट
सबल	निर्बल	सगुण	निर्गुण	सफल	निष्फल
सजीव	निर्जीव	सरस	नीरस	सदय	निर्दय
साकार	निराकार	सार्थक	निरर्थक	साक्षर	निरक्षर
आधार	निराधार	सापेक्ष	निरपेक्ष	उपाय	निरुपाय
भय	निर्भय	सदोष	निर्दोष		

(ङ) दुः, दुर् उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
महात्मा	दुरात्मा	सदाचार	दुराचार	सुदिन	दुर्दिन
सुचरित्र	दुश्चरित्र	सुकाल	दुकाल	सुपरिणाम	दुष्परिणाम

सुप्रकृति	दुष्प्रकृति	सज्जन	दुर्जन	आग्रह	दुराग्रह
सद्गुण	दुर्गुण	प्राप्य	दुष्प्राप्य	सुगम	दुर्गम
सुकर	दुष्कर	सुलभ	दुर्लभ	सुमति	दुर्मति
सुबोध	दुर्बोध	सौभाग्य	दुर्भाग्य	सुगन्ध	दुर्गन्ध

(च) 'वि' उपसर्ग योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अनुराग	विराग	आगत	विगत	क्रय	विक्रय
आकर्षण	विकर्षण	स्वदेश	विदेश	सम्पन्न	विपन्न
सम	विषम	न्यून	विपुल	सधवा	विधवा
पराजय	विजय	श्रम	विश्राम	सामान्य	विशिष्ट
समर्थन	विरोध	संकीर्ण	विस्तीर्ण	प्रसाद	विषाद
रत	विरत	ह्रास	विकास	संयोग	वियोग
संकल्प	विकल्प	संश्लेषण	विश्लेषण	स्वधर्मी	विधर्मी
स्मृति	विस्मृति	सजातीय	विजातीय	सफल	विफल
संपद्	विपद्	सम्मुख	विमुख	संधि	विग्रह
तप	विलास	स्मरण	विस्मरण	निर्माण	विनाश
पतनोन्मुख	विकासोन्मुख	घन	विरल		

(छ) 'कु' उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
मार्ग	कुमार्ग	विख्यात	कुख्यात	सुपुत्र	कुपुत्र
सुरूप	कुरूप	सुबुद्धि	कुबुद्धि	सुपात्र	कुपात्र
सुरुचि	कुरुचि	सुविचार	कुविचार	पतिव्रता	कुलटा
सुमति	कुमति				

(ज) 'पर' उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
स्वाधीन	पराधीन	स्वावलम्बी	परावलम्बी	इहलोक	परलोक
स्वतंत्र	परतंत्र	जय	पराजय	स्वकीय	परकीय

(झ) 'प्रति' उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उत्तर	प्रत्युत्तर	क्रिया	प्रतिक्रिया	घात	प्रतिघात
वादी	प्रतिवादी	सतयोगी	प्रतियागी	आक्रमण	प्रत्याक्रमण
ध्वनि	प्रतिध्वनि	बिम्ब	प्रतिबिम्ब	परोक्ष	प्रत्यक्ष
अनुकूल	प्रतिकूल				

(ञ) 'अव' उपसर्ग के योग से बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आरोह	अवरोह	आरूढ़	अवरूढ़	उन्नत	अवनत
गुण	अवगुण	उन्नति	अवनति		

लिंग' परिवर्तन द्वारा बने विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

ब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
रुष	स्त्री	राजा	रानी	मज़दूर	मज़दूरिन
र	नारी	पिता	माता	धोबी	धोबिन
नार	सुनारिन	लुहार	लुहारिन	कुम्हार	कुम्हारिन
लाहा	जुलाहिन	मोर	मोरनी	घोड़ा	घोड़ी

कुछ और विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द :

ब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
काल	सुकाल	अग्र	पश्चात्	अथ	इति
ल्प	अधिक	अमृत	विष	अभिमान	नम्रता
ल्पायु	दीर्घायु	अदोष	सदोष	अमर	मर्त्य
घ	अनघ	अवमान	सम्मान	आदान	प्रदान
य	व्यय	उदय	अस्त	उपचार	अपचार
त्यका	अधिपत्यका	उधार	नक़द	उत्तम	अधम
त्थान	पतन	उद्यम	अद्यम	उत्तर	दक्षिण
रिलिखित	निम्नलिखित	उष्ण	शीत	गुप्त	प्रकट
कतंत्र	बहुतंत्र	गरल	अमृत	आविर्भाव	तिरोभाव
ज़ादी	गुलामी	आर्द्र	शुष्क	अनिवार्य	वैकल्पिक
आलोक	अंधकार	अमावस्या	पूर्णिमा	अर्थी	प्रत्यर्थी
अवनि	अम्बर	अंगीकार	अस्वीकार	अर्वाचीन	प्राचीन
अन्त	आदि	अनुज	अग्रज	अंधकार	प्रकाश
आकाश	पाताल	आलस्य	स्फूर्ति	आभ्यंतर	बाह्य
गमन	आगमन	गहरा	उथला	गुरु	लघु
जीवन	मरण	गद्य	पद्य	ग़रीब	अमीर
गुण	दोष	गौरव	लाघव	ग्राम	नगर
घर	बाहर	घटा	बड़ी	घटना	बढ़ना
घालक	पालक	चपल	गम्भीर	चतुर	मूर्ख
चिरंतन	नश्वर	छल	निश्छल	ऐसा	वैसा
ऐहिक	पारलौकिक	कटु	मधुर	कृतज्ञ	कृतघ्न
कठोर	कोमल	कृश	स्थूल	क्रुद्ध	शान्त
कृत्रिम	प्रकृत	कृपण	उदार	खेद	प्रसन्नता
खीज	रीझ	खिलना	मुरझाना	खुशी	दुःख
तिमिर	प्रकाश	तीव्र	मंद	देव	दानव
धूप	छाया	नख	शिख	नूतन	पुरातन
नया	पुराना	नकली	असली	निन्दनीय	प्रशंसनीय
निकट	दूर	निन्दा	स्तुति	पाप	पुण्य
प्रलय	सृष्टि	पूरा	अधूरा	प्रसारण	संकोचन
प्रेम	घृणा	जल	थल	जड़	चेतन
जन्म	मत्य	जंगम	स्थावर	जागरण	सुषुप्ति

जटिल	सरल	ज्वार	भाटा	तटस्थ	पक्षपाती
तरुण	वृद्ध	तरल	ठोस	तुच्छ	महान्
ताना	बाना	तामसिक	सात्विक	मलिन	निर्मल
मानव	दानव	मिथ्या	सत्य	मौखिक	लिखित
मोक्ष	बंधन	रक्षक	भक्षक	रंगीन	बेरंग
राजा	रंक	राग	द्वेष	रुग्ण	नीरोग
रात्रि	दिवस	रुक्ष	स्निग्ध	वसन्त	पतझड़
वक्र	ऋजु	शूर	कायर	श्वास	प्रश्वास
स्वर्ग	नरक	सरस	नीरस	बाहर	भीतर
बाढ़	सूखा	बंधन	मुक्ति	बर्बर	सभ्य
बुराई	भलाई	भूत	भविष्यत्	मनुज	दनुज
अनुज	ज्येष्ठ	मनुष्यता	पशुता	मित्र	शत्रु
सच	झूठ	सुस्त	चुस्त	हानि	लाभ
शुक्ल	कृष्ण	हर्ष	शोक	हँसना	रोना
क्षणिक	शाश्वत	त्रास	आनन्द	त्रासदी	कामदी
लाभ	हानि	वन	मरुभूमि	वैमनस्य	सौमनस्य
शुष्क	आर्द्र	शयन	जागरण	शीत	उष्ण
सुलभ	दुर्लभ	सनाथ	अनाथ		

3. अनेकार्थक शब्द (Words With Various Meanings)

जिन शब्दों के प्रसंगानुसार अनेक अर्थ होते हैं, वे ***'अनेकार्थक शब्द'*** कहलाते हैं । जैसे :

1. **अक्ष** – आँख, आत्मा, पहिया, रावण का पुत्र, चौसर का पाँसा, कील, सर्प, धुरी, रथ, सूर्य ।
2. **अक्षर** – वर्ण, शिव, मोक्ष, गगन, विष्णु, अविनाशी, धर्म, तपस्या, जल, सत्य ।
3. **अज** – दशरथ के पिता, मेघराशि, ब्रह्मा, माया, शिव, ब्रह्मा, कामदेव ।
4. **अर्क** – काढ़ा, अकौआ, इन्द्र, सूर्य ।
5. **अर्थ** – प्रयोजन, धन, हेतु, ऐश्वर्य ।
6. **अनन्त** – आकाश, अंतरहित, साँपों का राजा, ब्रह्म, विष्णु ।
7. **अन्तर** – मध्य, अवसर, आकाश, छिद्र, अवधि, अवकाश, व्यवधान ।
8. **अरुण** – सूर्य का सारथी, सूर्य, लाल रंग ।
9. **अम्बर** – आकाश, वस्त्र ।
10. **अग्र** – आगे, श्रेष्ठ, मुख्य, सिरा, पहले, अगुआ ।
11. **अशोक** – एक वृक्ष, शोक रहित, सम्राट अशोक ।
12. **अपवाद** – कलंक, किसी नियम का न लगना ।
13. **अमृत** – पारा, दूध, स्वर्ण, जल, अन्न ।
14. **अंक** – नाटक के अंक, गिनती के अंक, भाग्य, परिच्छेद, चिह्न ।
15. **अलि** – सखी, पंक्ति ।
16. **अनी** – सेना, नोक ।
17. **आराम** – रोग दूर होना, विश्राम, बाग़ ।
18. **आदी** – अभ्यस्त, अदरख ।

आत्मा – अग्नि, सूर्य, परमात्मा, ब्रह्मस्वरूप ।
ईश्वर – परमात्मा, स्वामी ।
उत्तर – उत्तर दिशा, हल, जवाब ।
कल – श्रेष्ठ, अस्फुट, मधुर ध्वनि, सुन्दर, आराम, मशीन, चैन, बीता हुआ दिन, अगला दिन ।
कर – हाथ, टैक्स, किरण, हाथी की सूंड ।
कला – सोलहवाँ भाग, हुनर ।
काल – मृत्यु, अकाल, यमराज, समय ।
कर्ण – कुंती का पुत्र, कान, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा ।
कृष्ण – श्रीकृष्ण, काला ।
कनक – गेहूँ, सोना, धतूरा ।
काम – धंधा, कार्य, कामदेव, पेशा ।
कुट – हथौड़ी, समूह, गढ़, घर ।
कुल – संघ, केवल, सब, वंश ।
कंज – कमल, चरण की एक रेखा, ब्रह्मा ।
कक्ष – कमरा, कांख, बंगला, भूमि, श्रेणी ।
गति – मोक्ष, हाल, चाल, दशा ।
गुण – स्वभाव, धनुष की डोरी, रस्सी, गुण, कौशल, शील, सत्, रजतम् ।
गुरु – भारी, वृहस्पति, शिक्षक, दो मात्राओं वाला वर्ण ।
गौ – किरण, पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, इन्द्रिय, भूमि, कण, आँख, वज्र ।
गण – समूह, तीन वर्णों का समूह, शिव के गण, मनुष्य ।
ग्रहण – पकड़ा, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, लेना ।
घन – भारी, घना, बादल, हथौड़ा, किसी संख्या का उसी से दो बार गुणा करना ।
घट – मन, देह, घड़ा, कम, हृदय ।
चरण – पैर, छंद का एक पाद ।
चपला – लक्ष्मी, बिजली, चंचल, स्त्री ।
चन्द्र – चन्द्रमा, सोना, कपूर, मोर पंख की चन्द्रिका ।
चर – चलने वाला, खंजन पक्षी, दूत, जासूस ।
जलज – मछली, कमल, मोती, शंख, चन्द्रमा, सिवार ।
जलधर – समुद्र, बादल ।
जीवन – जीविका, परम प्रिय, वायु, प्राण, जल ।
जीमूत – इन्द्र, पर्वत, बादल ।
ज्येष्ठ – पति का बड़ा भाई, जेठ का महीना, बड़ा, श्रेष्ठ ।
तनु – शरीर, कृश, छोटा ।
तत्त्व – ब्रह्म, यथार्थ, मूल, पंचभूत, सार ।
तात – भाई, पिता, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र, ग्राम ।
तारा – बाली की पत्नी, नक्षत्र, आँख की पुतली, देवी विशेष, बृहस्पति की पत्नी ।
तीर – नदी का किनारा, बाण ।
ताल – ताड़ का वृक्ष, स्वरताल (संगीत) जलाशय ।

57. **दल** - समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, चिड़ी, पक्ष ।
58. **दक्ष** - चतुर, ब्रह्मा, वैश्य, क्षत्रिय, चन्द्र, दाँत, पक्षी ।
59. **द्विज** - कुसुम, प्रसून, फूल, मंजरी, लतान्त, सुमन ।
60. **दण्ड** - डंडा, सजा ।
61. **दिनेश** - आधार, समीप, आदेश, पात्र, अनुमति, कथा ।
62. **धन** - जोड़ा, सम्पत्ति ।
63. **धात्री** - माता, पृथ्वी, उपमाता, आँवला ।
64. **नग** - पर्वत, वृक्ष, अदद, नगीना ।
65. **नाग** - हाथी, सर्प, नाग-केशर ।
66. **नाक** - इज्जत, नासिका, स्वर्ग ।
67. **निशाचर** - राक्षस, उल्लू ।
68. **पय** - अमृत, जल, दूध ।
69. **पयोधर** - गन्ना, पर्वत, बादल, स्तन ।
70. **पद** - चिह्न, ओहदा, छंद चरण, गीत, शब्द, स्थान ।
71. **पतंग** - पैर, पक्षी, सूर्य, गुड्डी ।
72. **प्रत्यय** - शब्दांश जो शब्दों के बाद लगता है, ज्ञान, विश्वास ।
73. **पक्ष** - पंख, ओर, पन्द्रह दिन का समय, बल ।
74. **पत्र** - पंख, चिट्ठी, पत्ता ।
75. **पृष्ठ** - पीठ, पीछे का भाग, पन्ना ।
76. **पानी** - कान्ति, जल, इज्जत ।
77. **पूर्व** - पहले, पूर्वदिशा ।
78. **पोत** - नौका, वस्त्र, स्वभाव, बच्चा, गुड़िया ।
79. **फल** - भाले की नोक, चार पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष), नतीजा, लाभ, मेवा ।
80. **बल** - सेना, बलराम, शक्ति ।
81. **बलि** - बलिदान, राजा बलि, उपहार ।
82. **बाल** - केश, बालक, दानेयुक्त डण्ठल (गेहूँ, धान आदि की बाल), बाला ।
83. **बारी** - कन्या, नवयुवती, उद्यान, घर, छोटी उम्र की, एक जाति ।
84. **भव** - कुशल, महादेव, जन्म ।
85. **भुवन** - लोक, जल ।
86. **भाग** - हिस्सा, भाग्य ।
87. **भास्कर** - सूर्य, अग्नि, सोना, शिव ।
88. **भारत** - अर्जुन, भारतवर्ष, तुमुल, युद्ध ।
89. **भूत** - प्रेत, प्राणी, अतीतकाल, मृतदेह, पंचभूत ।
90. **मधु** - शहद, मदिरा, वसन्तऋतु, चैत का मास, एक दैत्य ।
91. **माधव** - महुआ, श्रीकृष्ण, बैसाख, वसन्तऋतु ।
92. **मित्र** - दोस्त, सूर्य, सहयोगी, प्रिय ।
93. **मान** - अभिमान, सम्मान, इज्जत, नाप-तोल, रूठना ।
94. **माँग** - स्त्रियों की माँग, किसी वस्तु की माँग ।
95. **रस** - नवरस, षट्रस, सार, आनन्द, स्वाद, जल, साहित्य से उत्पन्न आनन्द, अर्क, प्रेम,